

56 इस राहिक <u>मार्</u>क्ष सभार <u>्राध</u>्यम् म्हार्थे स्टिह प्राथमगराज्य औरहम दश्चिए र्देश्वर एपाएँ म्हार्ज ०२३ दर्ध्याभा भारत् म सिरोमए जगारेण



नेप्रटाए होपाठ ते. ठेप्टर्मिए पा॰टेपा४मए ५५४ ४१७७५१७ म मा⁹५४ पण्ट*ेस* माण्टली र *ने*ञ्च स्मीपाउंट्य टॉक्सपा टेड्सीप पास समक्रेड्स रु'टिञ्स परपाञ्च प्रांगण्टे भएंद्रस्ट हेगाठाण लागजम



प्पेञ्चर ग्रोपार्या **क्रमहेन ष्रण ह**िरोक्ष म्हरीमा*स तरा*गिमलीर्गः प्पेष्ट प्राचमसभाग टेक<u>ष्ठभ</u>°भ° द्रोष्ट त्रे. जा एँस ज्ञेमकेट



ನಿ ಗ್ರಾ<u>ಥ್</u>ಯ ಗ್ರಾಥ್ಯ ಗ್ರಾಥನ णमभुरी भागित्र ४७ *Œक्ष दैएए त्रेक्ट* क्षेत्रम् अष्या स्थान टि व्ये क्षा जीव स्वापामाण

HUEIYEN LANPAO

RNI Regn. No. MANMEE/2009/31282

Somes hand मंधाभिधा शेल्ज

णीर : ३२ भठमणील ,र्ज्ञाद र्रात्य हमंत्रीम मारीम विभाग माभिष्य इष्रात्मि क्राह्म प्राप्त स्मान रटेश्याञ्च जासएस्राण ष्टापार्टरम भादर्घश्रस रद्धामा त्रस्यर <u>प्राप</u>्तेत्रमर्टा, त्रह्मत्रिर मारामभ्रस्था राजेन्य भारतिम ीष्याप्यसणमात दर्श्न्यूक्ते ॥ रिञ्<u>ञ्</u>तिस्था ीर्जन पाटाम रहर्न भेग्रीय राजार क्ट्रिटा आम⁶प्राप्त भाम भाम भाम भारत ॥ १५७५ स्थातामा स्थापन स्थापन स्थापन अपन रिष्ण अमर्र्भ हिएक मर्रम ध्यम प्रणाटा सामुन्य स्था

...ह्य दर्सेट द्रम भारि अध्य रिः

ருத±ுய<u>ன</u>கு。∥

यातमात्रा ४५, मा अपाप "गेगरहायारा॰५ राजहरू

भूरमाध्य, प्रभार रू प्रत्येष्ठ श्रात्येष्ठ अत्य प्रत्येष्ठ) स्व े एक अध्य हुए प्राप्त (यह प्राप्त भार्य व प्रतयसीय सथ्य स्राप्ताय रूथाउ<u>र</u>े पाभग्राबद യനി यक्षय मन्यज्ञाय प्राप्त मन्य क्रिष्ठ हा भारत विषय प्रतामक विषय ट°भ रहिल्ली स्थापित अरहि र्धिश्य हिंग स्था (अध्य कि भ्राप्त मध्या) हें चित्र कि प्राप्त भाषा भाषा भाषा भाषा अध्याप्त के स्वर्थ के स्वर्ध के स्वर्थ के स्वर्ध के स्वर्थ के स्वर्ध के स्वर्य के स्वर्ध के स्वर्य के स् मदर्श्हर एक . क भञ्जल भिक्षा क्रम् ८० मार्थे कार्ये टिगिणिटल ग्रालिट टिन्स आत्यासन्तर्य राष्ट्रीआत पार रिभिष्ट गील जन्म हे, दर्क ग्रमण ുത്ത <u>ജ</u>ംങ്കുള്ള പ്യീഷാങ്ങള ॥ १४८५७ ४८म विष्युर्ध ॥ गिजसमार्ग भाषीष्ठमथ्य अर्घ्यदर्ष म्ब्राम्द्री ॥

...हळ दर्माठ र्यम

HL Poll

Q: Manipurda houjik thokliba kanglup masel muknabagi thoudok asi CM na taisinnaba ngamgadra?

POLL CLOSES AT MIDNIGHT Yes No

Vote thadanabagidamak www.hueivenlanpao.com da Visit toubivu

NGARANG GI RESULT Q: Manipurda houjik thokliba tangdu leitadaba fibam

asi Manipur leingakna thokhanbani loubra? Yes | 78% | No | 22%

血い S,2もしょ。 नास्तर्थ उन्नयान्य प्रायम्



೨೦೦೬ ಸಂಗಾರ ಕ್ರಮಗಳು ಇದ್ದು ಇ

मर्गाया है स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्व <u>भूत</u> है राजा प्राचित के स्वाधित के स

१५७० हैं के प्रत्य सिन्ध के सार्वेस अरम अर्थ महीस हर्ष के प्रत्यास प्रत्य सहित सह

र्र्फे) ३२ भठमण्णील ,र्र्वमद **電場 (1.5%): 電気名 24(1.5%)** (1.5%) (1 लभाराणम भारुकोर भारमण स्टामभ्रम भारुलम ग्रामुख्य प्रस्तान क्षेत्र रहमांग වා වියා වියාම් මෙන්ව त्रेष्टए णीणञ्चलः उत्रर्भणभंग्यः विदर्भलं एक एसः प्राचार प्रोक्षीमाष्य $\mathbf{n} \cdot \mathbf{n} \mathbf{n} \mathbf{n}$ ेर राज्य र्र पाधाज्ञीतज्ञात , दर्व गोध्य र्वधार प्राध्य प्राप्तित्र जिल्लामिक मिप्ति

माज मारा अराजनीय के अराज विकास माराज के अराजनीय के भंद अलीम होराहण राजनार्वा भाभारितम जेला राजेर मराज

उत्तर्भातिक प्रमाणिक प्रियम् स्थानिक प्रमाणिक प्



टाणियाम प्राप्ताच्या त्रिह्या प्राप्ताच्या स्वरंत विश्व वर्षा प्राप्ताच्या सर्वित वर्षा

टीहील हर्जाक्ष कार्कित लिए स्टेसिस किस हरायां हरायां हरायां प्रस्ति वार्याहें वार्याह्नी वार्य लिहरूके हायां हरायां स्वाप्त हरायां कार्याल प्पष्टम रमग्रीलक समद्ध स्टास्य उदर्व द्रीगापार्व्सञ्च लुहुःचा<u>र्व्</u>ड विदर्वर्ण होरील

स्रार्थेल सीर्थना ॥ වिष्ठीव्रपार्थेक दर्व्येक ोजास्वाीलडीडपाउटील र वालिनीम ोजरिस सडार्धिस राष्ट्रियीम । उर्दर भारीएम उर्दर स्वापिम । उर्दर हास्यान्य पाया पारक भारत के सत्भित हार्काल्य साधार्व साधार्व साधार्व साधार्व साधार्व साधार्व स्थापन भावार्व साधार्व साधार साधार्व साधार सा • छ७७५ ४॰णा विद्याराज्यास र्राय ८ ४४७ ए. १५०० व्याप्त १५०० व्याप्त १५०० व्याप्त १५० । इ.स. १५० व्याप्त १५० व्यापत १५० र्देत हाजीम प्रमाण प्रमाण प्रमाण के वाचित्रमा भाग महानाम भाग माज प्रमाण होता है के प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण जहूँ महीम , जात्यार्वे वार्या वर्षे अण्डमाधारणा किमाण रिरिटि राज्येक्टर जिल्ह എസ്ലാക നഴംശനിനയായ ഷെ യിനയ്ട്ടെക്ക് വളാച്ചപ്പ വസ്ത്ര ഉപവിവച്ചപ്പെട്ട്

ග්ලාපයන්න මැහේන මහන්වා වනවා වියන්න වනවා වනවා වනවා මහ සංදෙවනු ද දීමය අංසයන මහ මහත්වා සහනු පවත්වෙනවා දිය මහත්වා සහන්වා සහන लाजून रुज्याध्यामीत मनीम ज्लुगार र रप्योरणिय रुजें जगर भा (१० ग्रंभ रू) टो०ग्रसीय भर्न ग्रंभ टोपल्या रुठम भारिक पार्टार होस्टर्स पार्वेड हुक पार्किर होत्रहेर पार्व्हक एक हाजापार्वहरूर रिवार होस्टर र्रेयाचा भारता जाना प्राप्त होस्टर होत्रहें टेल्प्रेट इंग्लिस प्राप्त करेंद्र अंदर्भ कर इसमूर केंद्र कर जिन्द्र केंद्र केंद्र केंद्र केंद्र केंद्र केंद्र

॥ रियार्थक्रार्थ ೧೮ दर्श एगो ४ एभर एपियुंटे ट्रेट्येए स्त्रे छेए स्था प्रस् प्रस्ता अरा स्था स्था स्था नाणीलीमर्स्यात नारानाणि राष्ट्रिमिष्ट्राप्र Ĕ₀ℿ℁ℴℿ<mark>⅀</mark>℧ℴℿ रिभिट्टे पारिषेत्र रिष्टदर्बरीएणाम रदर्व दक्षर होला वर्षद र्जंडिकाणि स्थळलड सेक्टि लेलकर टेप्प्रप्रिता अर्द्धिय अधिकारिया ीणाहर मार्टा प्रतिप्रति अञ्चर्यः जाभूज्ञ ਹੱਲ'ਘਾ യാ காக எல்ல

७,४८८६६६८७५॥ दर्भक्र एज्जामूर । रियार्थक्वार्थ अञ्चर्क रुद्ध

> म्बलीमा भुन्न जलाम प्राप्तका ...ह्य दर्मेट र्सम

. मंड राणील समस्याल विषय आस्य गोंभे विचित्र हैं जिन्द कि सिंध कि सिंध कि सिंध के सिं

(च्ट्रेंस T°C 'එරෙරාවોਜ डोप ॥ විපස්ත්ය වරා ॥ 1එදී වසුපඟ? වෙම්සල සපමත්ත් පවෘද්ත පවස්තය 1 හිර<u>ාභ</u>තා හෙස ਟੁਸ਼ਾ न्यस्य प्रसाधक आस्तर्थ सहस्था अध्यात्रक स्वाया अध्यात्रक स्वाया अध्यात्र सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध व्याप्त सम्बन्ध एछ ४ॐऋोट<u>७भारा</u> गामस्टर्ड एदर्क प्रोमणाब ४१२५ पाठिन ॥ दर्भर्घ एदर्क १७४ हदर्डान्डें हाल्लानुं होद्रिक प्रार्थित इप्रभूत टिस राजियाए राजिस हैं है होता है जाता सहस्य है होता ताब जावां जह है होता है है

> **ष्ट्रिंट्रेम**ग्रास्ट्रिय ट<u>ाभर</u>ज्यः। । १५४८मीचः भारो५म स्नारण्यं स्थारो५म हिस्स्वरंग रूप्रभर्भन्न स्क्रम होत्रप्रस **॥ उनर ४ हा। राज्य के अध्यक्त म्हर्स म्हर्स अध्यक्त प्राप्त** (ट्रास्ट्र), प्रापीगात्व THUM THE ज्यासम् प्राटासन्य प्राप्तासम्बद्धः प्रज्ञाता संस् मुजास ७४ (जोटा है), प्राची है कि अधारम ्राने (प्राचि), प्रावेटीया <u>(प्रा</u>चिया) स्थित हे से स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप ाणिक के जिस्सा अर्थे के लिखा आर्चिसर्क मन व्यालिक लिया है। व्यालिक कि व्याप्त Γ हिंदी है जिस है है जिस है है जिस है जि ए. स्याख्या स्थापा स्यापा स्थापा स्यापा स्थापा स्य ॥ ब्रिस्टर्श प्राधिभन्दीम

णापीलीमर्स्रात ් ස්ථාන ස **ද්**ක්ගල ද[ී] ගලෙන ග්ලෙනල । । अध्यान स्वाहत्स्या । श्वाहत्स्या । स्वाहत्या । स्वाहत्स्या । स्वाहत्स्या । स्वाहतस्या । स्वाहतस्या ह्या हर्तिह भारीहण्डत उ^रण एउएर एण्यारमण ग्राप्यसण

स्टिम हर्ने भारिटाजिए एवं सिक्ष्य अभाराजा E.BR. C. BEH.C.J. रीजनील राजाची प्रस्ति रद्धम जाप्त्र महीम भूगोणम जीलोर्जना अल्य ारेक्सीय अटारेजार'क प्रकार कार्य हे साथ है है जिस्सा कराय कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य ह्मारिक पाठापार्ड भारतर्क दर्भ्यन्तर्वाष्ट्र भारीप्रम हरप्रस **ट्यामहीसार** अभीमाष्ट्र र्रोस्र ।। राजार्थन र राजील रहे ।। राजायार्था जमभिष्य सिर्वस्थन के राजायत रहे यभ्याना वामसीयामात्वार्घ ४ मध्य भारतिमास्त्रांत रिपार ब्यानार्थम

₣₺₯₯ $\mathbb{T}_{\mathfrak{d}}$ गोक्टर्जिट प्राप्ति प्रकट स्थाप प्राप्ति प्राप्त ज्ञान ने जारता जिस्सा विकास स्वाप्त कर्मा

ය දේකමාරයේප් ෆහල්භාග ෆාාග ගැටුර सर्वाणा छेट हैं है है है जातीय के हरी स्वाधार हो है इस मार्था म ාාලන ਆਨਿਸਲਸਤ जारायांट उस्वाविया । 'ब्लाग्रांस भारणसभूत स्रोटादर्भर्भर भारणक आत्मार्क्स प्रधारिटीं जारी प्रसिद्ध रहेन । इचारिक राम ॥ इचारिक कियार असमार गाउँ मेर्द्ध होती होती । प्रदेश होती ्रयोद्यास्य भेषा भाषित्रक्षीय ॥ श्राध्यस्याद्या रमर्रीम भारीप्रम रिप्रा हीत्र इत क्य

ळळण ठोत्रज्य जाणीलीमर्स्यात भ्वरदिहस्य भारतात्र महामान मान्यात्र ॥ १५ मान्यात्र मान्यात्र मान्यात्र मान्यात्र होत्र महामान्या च्हिल हे जिल्ला के ब्राह्म के मारिक हुन का किन्त को कार्य के जिल्ला के किन्त है कि जा किन्त है कि जा किन्त है कि जा कि ज गहुगन्नीमर्द राह्यार गात् महीम रद्धा भाराम राम स्वादम गमें ७७५ ो००७ रुलम दर्ब्येण ॥ १७४८ साधान्यस्ट पोल्जान भाषानुम रहस्ट्रे १००५ , त्रिदर्व रज्ञस्यार्ट्स प्राचित विद्याराज्ञाची विद्याराज्ञाच्या होज्याभव्य

. ज्याँ आरजाए आरज्याम जमह्याम <u>भ्यत्</u>वराम

रोगापार्वस्थन रापीयम रोजमय सपायम भादर्गम

ा १ जिल्लास हो स्वापन के सार्व के सार्व के सार्व के सार्व के अल्लाह के अल्लाह के अल्लाह के अल्लाह के अल्लाह के

अतर में ३ रह अप्रजन्न भरजन्न १ निर्मा रह भारत है है प्रमाणसाद अपर में से इस से से इस अपन से से से इस से से इस स

୫୧ भूषमण्डीह ह्र १८७७ अण प्रक्री) ें एक कार्य (ये कि प्राप्त (ये कि प्राप्त (ये प्राप्त प्र प्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्त न्या मण्याद <u>४ट</u>॰प्रा॰ज വീഗാസംഘ്ഗ tiontion ह्यार इ.स.-१५ स्थान स्थान , रसिक्समण ॥ अब्दर्ध में भिम भिजा अध्यात क्रमार्<u>ड</u> भरजञ्जा भिर्भा ह्याईए प्रायमण दमिष्ण ॥ <u>भन्</u>यर्क्त में भिम

य काराया है के उसमें प्रामणकाद माने कारण में भिम थिया ल्याप्रम ल्यार्<u>घ इ</u> ण्डूमर्स द्रम विष्णण<u>भष</u>्योह्र विज्ञार्एण ॥ विर्यूप्त में अधारिष्ठ हरूया था अध्यक्ष रहे हर अर धाउम **त्राप्त प्रथा १८०५ प्राप्त १८०५ प्राप्त १८०५**

गारभर मध्सन्य भर्यामधीषा ब्रह्मं एद्यं रद्यं भ्रत्याण

र्देक्षणमा 🕏 ५२ ५ (२२९२) मध्ये मध्ये क्षेत्र प्रात्ने प्

होमार्ग सक्ष्याच्या उपाय क्ष्या हे सर्वेद्ध भारत स्थान हो सर्वेद स्थान १०.२६ स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान जिस्सा हिन्स हैं के सम्बद्ध के समित्र के सम मिस्टर्क रिटें स्टिन्स्टिस रिकार्पर्रा भारिक श्रदर्क प्रदूधका मायानमूह महर्भमा विस्वाचक्र स्थान्य विषय प्राप्त प्राप्त हिन्स । विषय हिन्स प्राप्त हिन्स प्राप्त हिन्स हिन्स हिन्स हिन्स हिन्स हिन्स हिन्

क्रिट्टिं ३३ मिश्रील यस द्वा दिया

स्टर्स पाटमस्ट्रा पारडें जातम विद्यापा विद्यापा प्राप्त होत्या हो ।

र पारामिकारा क्रिमक सार्<u>क्ष</u> स्रान्य दक्षीत रहे राजम

न्त्राराधाधिक रेज अलब्<u>रल</u> लीजार लग्म अन्य गारतार्धिम अलब<u>्रल</u>

ीणाम्राफ्र माठ पाठानीटागार समन्त्राच्या ३३ दर्भ्यम् ,स्रारापाधन्त्रपाद्य स्रोटाफ

…ह्य दर्में र्रम

all PÀILL

र्ह्यम विद्यालय कि त वर्षण जन्म प्रदेश २२ भवसालाह , न्विमत

टॅर सेंड्र५ प्राथित स्थान रत्याधम भामत्र ५००४ क्रिमण विज्ञाण राज्य होता रज्ञार विद्यार्थक विषया विद्यार विद्या टा हुए हार्य एक स्थाप सहस्या विश्वास हिन्द निर्माण स्थाप श्रुर पामा (२३३८/१० ज्ञुज्ञ मन्त्र) प्राप्त रक्ष्यार में । क्यं भें भें भाषा भारतियोई र्स तमिष्ट रूप एक पण पारम रिप्प होराप्यभम

...ह्य दर्मेट र्स्म

IM IM HoD s調用な FB Paokicomm

र्द्या) ३२ भठमणील ,र्ज्जमद \mathbb{Z}^{∞} . The property of the property \mathbb{Z}^{∞} is \mathbb{Z}^{∞} . The property \mathbb{Z}^{∞} ॥ दार्चारी अञ्चतान्त्रम भागिक्र णोर्रेंत्रः ४ अन्त्रील<u>भा</u>त स्रभातीप्रम जभरम् ग्रेटिक रेन्ड मान्यायाला अन्यायाला ग्रेस्ट विष्ठ हे विष्ठ हे विष्ठ हे विष्ठ हो विष्ठ विष्य श्रम हे उद्धार विषयानाचा है से मार्क विरामित स्वाति है से मार्क विरामित स्वाति है से मार्क विरामित स्वाति है से मारी भारी) ए उन्नाम्लिवसम्मर्स ॥

भञ्जन्त्रीलमा लद्धि भाष्टिमा <u>ष्ठट</u>॰प्रा॰त्नए ᡁᢀᢧᢐᠴᢓᡁ प्रताम हे प्रताम हे पर पर प्रताम उहार प्रताम है कि एक्ट प्रताम है जिल्ला है ॥ दणीएएथी में रे एमर्री में रोष्ट्रा भाषदर् ද්කුලභ් ။

प्रक्रम ॻॎॐऽत⊯ण ॻॻऻऽॕॡ र्देंग्रेणटि ४ ॥ भिष्ठि किषठ के भाषत्र कि अन्याति ।

把24出 **四**面246

(आ<u>ष्ठ</u>टिशिष्ठी) में ज्ञ गासिए फ्रंप्स २०० स[े] स सप्रक्राप्ट कार्यसिणा रहुमा । भुराणा राजी राजारामीमा मराम ग्रीत अभा हे , दर्ज एमम रेतम ह्रम हिण्य हेर्ड स्थान्य प्राप्त होन्य राज्य होन्य हेर् हर्षभास रंटा है से विकास में जा किया है कि से कार्य के जा कि से कार के जा कि से कार्य के जा कि से कार्य के जा कि से कार के जा कि से भरीन्द्रे गीए अगा तू हैं ज सुरदर् रहर्वे हुर हमित्री ज हरदर्व <u>भर</u>हीर्दे ण<u>भर</u>्भेग भाषाणाणमुद्र क्रियाना स्थान स्थान प्रमाण मार्थ साम्यान क्ष्यान क्ष्यान क्ष्यान स्थान प्रभान प्रमाण कार्य साम्यान क्ष्यान प्रभान प्रभान प्रमाण प्रभान प्रभान

...ह्य दर्सेंड इंद्रम

28.00 <u>anacos</u> ८६ प्राप्त स्ट

ण्योलन्यत्यमार विद्यास्य विद्याप्त क्याप्त क्<u>राप्त</u> अञ्च ॥ १५७४० ता १५५४ में अल<u>क्त</u>िर स्थित र १५५<u>५ त</u> रहीन्द्रें मुम॰रद मंडाँद्रव्यो

णाणीलर्रञ्जर रिपार्श्<u>भक्त</u> ज्या पार्क्य ३२ भवरमल्लोह , र्रिमद ७७५ समरीम एस च देमठ स्थान व्यवस्था अध्य क्या स्थान R -Fiata usate mayar aya inan $^{\circ}$ ीण<u>(भिष्</u>रणण स्थापन पार्गासिस्ट भार<u>्स् भिष्</u>रणण स्थार्रस्थ ८० ४ ८ रिधिट रणहण्यस्था महीम रदर्वदाणि भर हमाणे भए ा छिड़ीर पारक पारक पारक सर्विष्ट हार्विष्ट कर्विष्ट करिया कर्विष्ट करिया करिय णमद गि<u>°भर</u>ूण रूग पार्क्यं मर्रयाण रत्नोत्र्य गात्रदर्षार् ष्रियादीण्य दर्गीम भिन्नर्भिष्त भिम्न भारतीम भिराम भारतीम

> ग्रदर्क स्रोण्णाधिस्य रिक्षा विद्याप्त हरूका भ्रतीम ,दर्र प्रापर्म त्यात्र प्रश्निमा होस्तर प्रजात होस्तर प्रजात है। जार कार्य कार्य न्त्रदेत स्रीहर्वज्ञ एन्यव्य रिप्रण सद्धिके पामम क्षित्रज्ञम दूर तुन्न तत्त्वम, येंच क्यान्य का क्यान स्त्र क्यान प्रमाण क्यान ह्यू जरभग जीलाजम प्रमुद्ध हुरदर्क मंत्रीम । बिरापर्वाणीत माम मंत्रीम रिजुर्ह्स ा ॰४८ प्राप्त सन्तर्भ मार्थन प्राप्त कार प्रमाय के प्राप्त कार मार्थन महिल्ला कार मार्थन महिल्ला मार्थन महिल्ला पारिष्ठठाक्रास सब्दान्त्र यात्र प्र<u>राष</u> या प्रमुख स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स ॻज़ॶॴढ़ज़ॾॱॼढ़फ़ॴॗफ़ॱॶ<u>ॹॹ</u>ॹॼऻढ़ज़ॴढ़ज़ॴढ़ ಹಟ್ಲಿ ಸ್ವಾಸ್ಟ್ ಸ್ಟ್ರಾಸ್ಟ್ ಸ್ಟ್ರಾಸ್ಟ್ ಸ್ಟ್ರಾಸ್ಟ್ ಸ್ಟ್ರಾಸ್ಟ್ ಸ್ಟ್ರಾಸ್ಟ್ ಸ್ಟ್ರಾಸ್ಟ್ ಸ್ಟ್ರಾಸ್ಟ್ ಸ್ಟ್ರಾಸ್ಟ್ ಸ್ಟ್ರಾಸ ॥ रिदर्क प्रभाष्टि रिक्र सिर्म अर्था अर्था ोण'भरूग्रम ,दर्व एपार्वम

ष्टण्यः स्राप्तर्भत्तीम प्रमित्रीम प्राप्तिभाम स्वाप्त ग्रह्मचर्द्ध अर्दे शिक्षा प्रारम्बन्धा े जिस्राण महीम जिल्ला होस हभरपार्वाण रिष्ट `मार्ण सिंहम प्रज़ुल सर्भ टेंटट प्र°ा, स्टीज्ञल टेंग्रोर्णा सर्भ गोधार्रे प्रोक्षेत्र के जिल्ला है सिन्न तेंट्र के प्रोक्षित्र गार्टिल स्राप्तरुणीय प्रोटाबर्रियाम राज्युर जबर्ब्यू मरप्रपूर्ट सराप्रोत्ते स्राप्तर्भात्वरुष्ट र्रह रर्णात उमहीम भिष्वरूक र ३२ भिोट्रें ,दर्र रापेटोमर्स

...हळ दर्सेट ब्रिस

एमा उम्म सीमा अहरभवागी रिष्य मार्च निम्य सिक्ति अधिक अधिक अधिक भाषा अधिक भाषा अधिक भाषा

, दर्ज प्रदेशिष था. हे प्रस्थामा ३२ भवनात , त्रेस

हात्मस्य हे. **ए** अराजे, उमार्ग सुन्ने असमर हमजमराजि क्षरद्वार प्रः प्रः का क गीर्ण त्रेष्ट्रपत्र कार राजक राजक वि मिर्चर प्रेस एटा मा उठामा के अध्यक्त अध प्रमाण के अधिक प्रमाण के प्रसम्बद्धाः प्रा<u>प्रम</u>ित्र प्राप्त ८६ चा भूज

ALE IMPORMI र्मक∘न

सिन प्राताम हिमारीय जन्म अभित्र स्थान अध्य प्राताम र्सा गर गार रण्यन्भगन धाराल भंत्र यल्या प्राण्ण जन्द निसन्धा १७४५ स्वापित भ्रजनात भ्रजनात भ्रजनात जन्म गिन्नि भिन्न । दण्डभगञ्चन् रणुण्डम<u>न</u>्य गिर्वादभरपोड उपारियोगार अहरामा भारापटी स्थानियम रिवार अध्यामाय पार्शमाम ॻॻढ़॰॔ऽ ॴॴ४५५ विमऽ पा॰॔ॻॐः ॥ <u>°भग्</u>यपा॰॔ग्राणीस रुद्ध<u>राष</u> ८९<u>°भग</u> र र्राट मालुर्वर्ड पाधिर्वर्ड ४°<u>४०</u> भूगाधम रहुमभुद्र र्गातम उपारिप्राप्त ॥ विभान्त्राप्तभं दश्य विषय भार्यक्ष विषय अभीय विषय

मृहित स्ट्रिया स्ट्रिया स्ट्रिया स्ट्रिया रणिष्ठा रण्या हे न्यर वीर प्रशानिक प्रशानिक प्राप्त विकार E SIKOKJE KEDO KEDO TEMP PEOR CHIMENTO PER CHOMENTA TO COMPAND A C हर्सम विषय एक अधिर कि<u>भ</u>ण प्रदर्भ विषय स्थाप स्थाप मुस्य ह्यान्य सम्भूप

... ह्य दर्मे र्रम

ह्र ता अग्रम हा साम प्रमा हेर्ने का अप्रमान के अप्रमान के अप्रमान के अप्रमान के अप्रमान के अप्रमान के अप्रमान தூரி நா அரசு முக ஆயிகு இர

नियापारित हर्ष विस्ता अर्थ असी असी विसार प्राप्त हर स्कू के का क्रिया स्था हिन्स स्था अर प्राप्त के अपने का स्था का अपने स्था जारम अंदीं उदर्भ ॥ विभारणाया प्राप्त अंदीं है अर्था अर्थां अर्यां अर्थां अर्थां अर्थां अर्थां अर्थां अर्थां अर्थां अर्थां अर्थां अर्थ ा का का के मध्ये स्थान ता मान्य के भारत के मध्ये हैं भारत एकर भन्ना भा (मध्य दर्भ) जन्म -ेर ोन्हमण ९७ भाभिभा ,त्रदर्शम ॥ रियार पार्क्स रदर्श्यम पाठमंत्र रिर्भा व्या ७७० ०० वा वा वा द्रश्यम प्रष्ट्रेय प्राप्त प्रश्ना प्राप्त हिंदी भिष्म समध्यम स्थाप हिंदी प्राप्त हिंदी प्राप्त हिंदी प्राप्त हिंदी प्राप्त हिंदी है र्म भारकार अराहित सम कराहित सम कराहित अराहित अराहित सम भ्यामान्याया समन्यायान्य ॥ र रासान्यस्य ॥ रामान्यस्य ಗ್ರತದಂಗಿತು मध्य विश्व पार्टिस मध्यियम अस्त्रीत राम्य विभाग प्रस्तर्थे प्राप्त ॥ भिदर्श् यम्मय रुक्षभ्र भारिशेक्स, दर्क जहाम रिधिस

प्पर्रहर्षेत्र रिप्रण म*ें स*्रा<u>ष्टार्थ</u> सार्धमं राज्ञेल १२ भवमणीह ,र्रमंत **पळ्टा माल्डमा ट्राह्म**

रुषाटीष्ठ <u>गास्</u>र°<u>ष्ठर</u>°म सङ्ग

ग्रहेर पारम हाउमा ॥ व्हान हाभाभिष्य ॥ हामाप्ति हा हाभाभिष्य १९७७ मध्य प्रक्र ण्डूग्रस हर्सर हाया प्राप्तमाम स्थाप<u>्तित</u> स्कूम महाम होधदर्क प्रथम १० ००म प्रथम होल प्रथम मससम ग्रीविश विषयातीयस मध्य विषयित व्रव्याधिस्य व्याप्त प्रदेशहरूद विस्तर वर्षा हर्याता यह प्रमुख होज की म भूगों प्रमुख जाती प्रमुख मांजिय के प्रमुख होज भाजनियम प्रमुख है है है है भागीयम गारम्बर्स्स विवाद अप्राचित्र हे रहरू भाम प्राचित्र है जिल्ला है है जिल्ला है ज समरीम एदर्व १०५७भाम १५६ राष्ट्राम १६६ मारुद्र प्राप्तम १६६मा ६६६ रमरीम भाराभ र्जि रिक्राणिम । भिन्नेर मीप्रक एक्राणि एक मध्य । विषयित्र एक्षा प्रभावत्वा प्रभावति क्षा रहे हिंदि । म॰क दर्क हु१४८१५साध एन्य्याहर हु ११९१०का दे एउणा भार भार का भार भार का भार हुए एउस एक १९४५ अट्टान्द भित्री हास । (मध्य दर्म) राज होते में जलमंद्र सधमारास भिभा भ्यान्य एक एक एक प्राप्त मध्य प्राप्त अप ाजिस हैं हेट स्वरंध कार के स्वरंध कार के स्वरंध कार से स्वरंध कार से स्वरंध कार कार के साथ कार कार कार कार कार प्रथम प्रस्कर

…ह्य दर्में रस

र्यो) ३२ भठमण्योह, ज्ञंसद **त.**८०)ः द, त.६४ त.५५४स राज्यस्य राज्यस्य स्वरं स्वरंभ स्वरंभ स बीस गिभासाणम गदर्ने गिष्ठाणाड्य सिंदिएअस क अष्टि मार्थ गार्डाल <u>ल</u>ुख्ल लांडाम प्रम गूसमञ्ज*ल*ाल, इ.स.स.गू

ोठमा गाध्य दर्स्याए गाप्<u>भर</u>स

मेर्जेट्स ह्योर्ज्यर्

ധനി

सहि सिंदिएऋस व्ये ऋष्टेशिए 🥻 മ്പ്യാർ നിയ്യുന്നു വാര്യ Шर्ग्र



॥ ७५० मा १८० वर्ष के प्राप्त क्रमध्न मा १८१ के अप्र हैं के एक कि समर्थ पार्य वर्ष हैं एक समर्थ है

पार्क्य मद्ध अंड ोह्रमण रिष्णा

ाजिया उपाठ पाउभर १२/२१ जि. विस्तार विस्ति हैं से स्वर्ध के अधिक प्रत्येष के स्वर्ध के अधिक स्वर्ध स्वर

हर्टात्र भारमघर्भर प्रज्ञेर ज्ञानक्<u>रतः</u> हरजीलदर्श्ड माम महम पा॰५<u>भभा</u>र ॥ रिदर्क रिजाजपाधी विमर्शम ॥ रिज्ये रिजाजपाधी യന്മാരുന്ന പ്രപ്രക്ഷേത

रजन्दे वारम निर्माणक जिया भन्न मन्त्राचा विष्ट हो रज्ञ स्त निमित्रक महमठ िक्क ॥ छिँदस प्राप्तर मर्जेर निमिक्क उपाणि अधिक एक्या , प्राचित्रक प् गारणा हे हे जा स्वयं मध्य प्रभाव मध्य प्रभाव मध्य प्रभाव मध्य ०७मंद्रीम ॥ ब्राप्पंगार हर्बाष्ट्राण राख्यांट राज्यां । । व्यापंगार हर्वाष्ट्रा ॥ राठिपार्गत पाल्यम घग्रन । एक । एक ११ २१ ८०००मांत घग्रात ॥ एक समाधाठान्य महक्र एक्टमां द्वार एक उपार्वेष अराज्य ह्या विद्यार्थ । ण्डा उड़ाने साम कर्णा साम कार्या साम कर होता के अपने कारण करें होता उपने कारण मार्च का अर्थ का भारत होता होता है जिल्ला होता है जिल्ला है जिला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है ब्राया अस्याप ने वाजन विकास करणानिका रिकार प्रतिकार का अस्तिक हिल्ला है हैं है जिस्सा अस्तिक के अस्तिक का अस्तिक के अस्तिक क ...ह्य दर्सेट द्रस